International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

रामनामी संप्रदाय के राम

डॉ. शुभ्रा मिश्रा

विभागाध्यक्ष (राजनीति शास्त्र)ए शास. मदनलाल शुक्ला महाविद्यालय, सीपत, जिला–बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ का अस्तित्व रामायण महाभारत काल से ही ऐतिहासिक तौर पर हमें मालूम होता है। इस समय से ही छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक धार्मिक अनेक विभिन्नताओं से परिपूर्ण था। यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धार्मिक मतों के मानने वाले हमें दिखाई देते हैं। इन धार्मिक मतों के साथ ही छत्तीसगढ़ में हिन्दू धर्म के गर्भ से ही जन्में हुए अन्य संप्रदाय का अस्तित्व भी दिखाई देता है जो धार्मिक सामाजिक आंदोलन की उत्पत्ति कही जा सकती है। जिनका अस्तित्व छत्तीसगढ़ में नहीं बल्कि विश्व पटल पर भी दिखाई देती है जैसे सतनामी समाज, कबीरपंथी, रामनामी पंथ के नाम उल्लेखनीय है। इन पंथों के विकास का श्रेय मध्यकाल में हुए भक्ति आंदोलन को कह सकते हैं। जिसके परिणामस्वरूप ईश्वर प्राप्ति के दुर्लभ मार्ग को सरल रूप में जनसामान्य तक पहुंचाया गया। इन्हीं में से एक संप्रदाय रामनामी संप्रदाय है जो हिन्दू धर्म के निर्गुण शाखा के उपासक है। जिनके देवता दशरथ पुत्र राम हैं, पर वह एक निराकार रूप में है। इनका मानना है कि सवर्णो द्वारा समाजिक और जातिगत अत्याचार से और मंदिरों में प्रवेश वर्जित किए जाने से भक्ति आंदोलन के दौरान एक नया रास्ता खोज निकाला गया जिसमें इन्होंने ईश्वर प्राप्ति हेतु किसी मंदिर में न जाना पड़े, न ही मूर्ति की पूजा की जाए।

रामनामी संप्रदाय अपने कण–कण में राम को मानकर उन्हें अपने दिल की गहराई में बिठाकर पूजने लगे और जिसके लिए इन्होंने अपने पूरे शरीर में राम के नाम को गोदना गुदवाकर राम को समर्पित कर दिया। इस आंदोलन से एक नई प्रकार की सामाजिक चेतना आई। इसकी संख्या दिनों–दिन बढ़ती गई। जिसमें सर्वाधिक दलित वर्ग के व सामाजिक जातिगत सताये गए लोगों के द्वारा इस संप्रदाय को अपनाया गया। यह संप्रदाय महान धार्मिक विचारधारा रखने के बाद भी आज अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। संपूर्ण विश्व के जानने के पहले ही यह संप्रदाय के लोग दिनों–दिन कम हो रहे हैं। भारत सरकार की व्यवस्था के द्वारा सैनिक भर्ती योजनाओं के तहत शरीर में टैटू गुदवाना मना है। जिसकी वजह से इस संप्रदाय के युवा अब गोदना गुदवाने से कतरा रहे हैं। इसके साथ ही वर्तमान युवाओं का झुकाव शहरीकरण आधुनिकीकरण की वजह से भी पूरे शरीर पर गोदना नहीं गुदवा रहे हैं जिनसे इनकी सामाजिक परंपरा छूटती जा रही है। इस आलेख के द्वारा रामनामी संप्रदाय के मूल सिद्धांतों को बताने का एक प्रयास किया जा रहा है और नई युवा पीढ़ी जो इससे अलग हो रही है उन्हें सकारात्मक लक्ष्यों के साथ रामनामी समाज में जोड़े रहने का एक प्रयास है। इस लेख में द्वितीयक पद्धति विवरणात्मक पद्धति से सामग्री का संकलन किया गया है।

रामनामी समाज की स्थापना 1890 के आसपास परशुराम भारद्वाज द्वारा की गई। इन्होंने ही सबसे पहले अपने माथे पर ''राम'' शब्द का टैटू बनवाया इसलिए इन्हें इस संप्रदाय का संस्थापक माना जाता है। एक हिन्दू संप्रदाय है। जो भगवान राम की पूजा करता है। ये मुख्यरूप से छत्तीसगढ़ में रहने वाला है। इसके अनुयायी अपने शरीर पर ''राम'' शब्द का टैटू गुदवाते है। राम शब्द के साथ शाल पहनते है और सर पर मोर पंख से बने टोपी पहनते है। यह संप्रदाय भक्ति आंदोलन के समय उत्पन्न हुआ और सतनाम पंथ की ही एक शाखा है। इनकी आबादी लगभग दस से पन्द्रह हजार तक है। छत्तीसगढ़ में स्थित कोसलग्राम में राम की माता कौशल्या का जन्म स्थान है। इसलिए वनवास के दौरान राम छत्तीसगढ़ के घने जंगलों में अपना अधिकांश समय व्यतीत किये ऐसा माना जाता है। जिस मार्ग से राम जी का छत्तीसगढ़ आगमन हुआ और ठहरना हुआ उस पथ को छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा श्रीराम वनगमन पथ योजना के अंतर्गत उसे संरक्षित और संवर्धित किया जा रहा है। इस योजना से अनुमान लगाया जा सकता है कि छत्तीसगढ़ में उनका धार्मिक प्रभाव कितना है और हर वर्ग के द्वारा यहां राम पूजे जाते हैं। इन्हीं में एक रामनामी संप्रदाय भी है जो पूरे शरीर पर रामनाम का गुदना तो गुदवाता ही है यह पूर्ण रूप से अहिंसक शाकाहारी और मदिरा से दूर रहने वाले होते हैं। सरसीवां रायपुर के पास महानदी के तटवर्ती इलाके में ''उड़काकन'' रामनामी संप्रदाय का एक पवित्र तीर्थ स्थान है तथा शिवरीनारायण इनका प्रमुख तीर्थ स्थल है जहां माघ के पूर्णिमा से पहले लगने वाले मेले में तंबू लगाकर ये भजन कीर्तन करते हैं। जहां राम नाम का अंकन हुआ इनका शरीर लोगों के लिए आश्चर्य और आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होता है।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर, जांजगीर–चांपा, महासमुंद, रायगढ़ जिले के आसपास करीब 300 ग्राम में यह संप्रदाय निवास करता है। रामनामी संप्रदाय में चार प्रकार के रामनामी पाए जाते हैं। जिनमें शरीर में रामनाम के अंकन से वरीयता दी जाती है। प्रथम शरीर के किसी एक हिस्से में रामनाम का गोदना गुदवाने वाले को रामनामी कहते हैं। दूसरा माथे पर रामनाम का गुदना गुदवाने वाले को शिरोमणी कहते हैं। तीसरा पूरे माथे पर राम–राम गुदवाने वाले को सर्वांगरामनामी कहते हैं। चौथा शरीर के संपूर्ण हिस्सों पर

राम–राम गुदवाने वाले को नखशिख रामनामी कहते हैं। इस प्रकार ये बंटे हुए हैं। रामनामी संप्रदाय में बचपन में प्रथम बार माथे पर राम–राम गुदवाया जाता है। फिर उम्र के प्रत्येक पड़ाव में शरीर के दुसरे भाग पर राम नाम गुदवाते जाते हैं। गोदवाने के दौरान पीड़ा होती है। इससे ध्यान भटकाने के लिए समाज के द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन किया जाता है। जिससे मन राममय हो जाता है और पीड़ा सहने की शक्ति आ जाती है ऐसा इनका विश्वास है।

इस समाज की अपनी स्वयं की पंचायत व्यवस्था है जिसमें आपसी टकराव या मतभेद का निपटारा पंचायत के माध्यम से कर लेते हैं। अपने विवादों के लिए इन्हें न्यायालय जाने की आवश्यकता नहीं होती। इनकी पंचायत व्यवस्था इस पंथ के प्रारंभ से ही चली आ रही है। 1960 तक गुरू प्रथा से पंचों का नामांकन किया जाता था। वर्तमान में इसमें परिवर्तन आया है। अब नामांकन प्रणाली के स्थान पर चुनाव प्रणाली के आधार पर सदस्यों का चयन किया जाता है। प्रतिवर्ष पंचायतों के लिए पंचों का चुनाव होता है। जिसमें 100 पंच चुने जाते हैं। प्रत्येक पंच आठ ग्राम का प्रतिनिधित्व करता है। सभी पंच महासभा के प्रतिनिधि होते हैं। जो आपस में महासभा के पदाधिकारियों का चुनाव करते है। यह पंचायत सामाजिक पारिवारिक झगड़ों का निपटारा करती है। इस तरह ग्राम पंचायत न होकर यह एक सांस्कृतिक संगठन को मजबूत बनाने वाली संस्था है जो सामूहिक विवाह भी कराती है। रामनामी संप्रदाय में मुख्यरूप से दो आयोजन किए जाते हैं। प्रथम रामनामी संतों की सभा, दूसरा पूष के शुक्ल पक्ष एकादशी से त्रयोदशी तक चलने वाली मेला का आयोजन। मेले का प्रारंभ रामनामियों के एक बड़े भजन से किया जाता है दूसरा एक चौरा बनाया जाता है जिसमें ध्वजारोहण के साथ औपचारिक रूप से मेला का प्रारंभ किया जाता है। जहां मेले में अलग–अलग समूहों द्वारा रामायण पाठ किया जाता है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक पारिवारिक या अन्य प्रकार के झगड़ों का निपटारा किया जाता है। इसी मेले में सामूहिक विवाह भी सम्पन्न कराया जाता है। इसके पश्चात् अगले वर्ष मेला किस स्थान पर लगेगा इसका भी निर्धारण किया जाता है। रामनामी मेले के आयोजन के संदर्भ में एक लोककथा भी प्रचलित है कि रामनामीयों से भरी एक नांव महानदी पार कर रही थी किन्तु बाढ़ में वह फंस गई। नागरिकों ने नाव किनारे लगाने की कोशिश की पर वह असफल रहे परिणामस्वरूप नाव में फंसे सभी नागरिक अपने–अपने ईश्वर से प्रार्थना करने लगे फिर भी कोई लाभ नहीं मिला जिसमें एक रामनामी संप्रदाय का भी व्यक्ति था। अन्य लोगों के आग्रह पर उस रामनामी ने भी ईश्वर से अनुरोध किया कि अगर यह सवारी से भरी नाव सकुशल दूसरे किनारे पहुंच जाती है तब रामनामी समाज द्वारा प्रतिवर्ष महानदी के किनारे पर बड़ा भजन मेला आयोजित किया जाएगा। यह कहते ही नाव सकुशल किनारे आ लगा। तभी से रामनामी समाज के लोगों के द्वारा प्रत्येक वर्ष दूसरे किनारे पर मेला और भजन का आयोजन किया जाता है।

इस मेले का प्रमुख आकर्षण राम मेला होता है। मेले के मध्य में स्थित जयस्तंभ और चबूतरा होता है। चबूतरे के चारों तरफ राम नाम अंकित किया जाता है। यहीं पर रामचरित मानस की प्रति का पाठ किया जाता है। 1911 में सर्वप्रथम मेला महानदी के किनारे ग्राम पिरदा में आयोजित किया गया। रामनामी संप्रदाय जिसमें कोई भी शामिल हो सकता है जो किसी भी जाति, वर्ग और संप्रदाय से सबंधित हो। रामनामियों ने गोदना परंपरा को एक नवीन रूप और अर्थ प्रदान किया है। रामनामी स्त्री और पुरूष रामनाम का अंकन अपने संपूर्ण शरीर पर अंकित तो करवाते ही हैं वहीं आंख में नाक में ऐसे ही संवेदनशील अंगों पर भी गोदना गुदवाते हैं। यह संप्रदाय गोदना गुदवाकर अपने संपूर्ण शरीर को राम को समर्पित कर देते हैं और शरीर को ही मंदिर बना देते हैं और उनके हृदय रूपी मन में ईश्वर निवास करने लगते हैं। इस प्रकार इनके पूरे जीवन में रामनाम जपना इनके नित्य स्वभाव का हिस्सा बन जाता है। ये अपने आसपास के समस्त वस्तुओं को राममय बनाने हेतु सभी जगह राम नाम का अंकन कर देते हैं। वह घर जिसमें रामनामी निवास करते हैं उनकी दीवारों पर भी रामनाम का अंकन हुआ रहता है जो वस्त्र स्त्री पुरूष धारण करते हैं उसमें भी रामनाम का अंकन हुआ रहता है। रामनामी मंदिर मूर्तिपूजा बाहरी आडंबर का त्याग करते हैं परंतु ये केवल शिवरीनारायण के मंदिर में जाते हैं। जिसमें इनकी आगाध आस्था है।

छत्तीसगढ़ अंचल में रामजी का संबंध त्रेता युग से है जहां दक्षिण कोशल नामक यह प्राचीन क्षेत्र रामजी का ननिहाल रहा है वहीं रामायण के लेखक महर्षि वाल्मिकी का संबंध तुरतुरिया आश्रम से है कहा जाता है कि लवकुश का जन्म स्थान तथा दण्डकारण्य का जंगल राम का वनवासकालीन कर्मभूमि भी रहा है अर्थात् इन तथ्यों और लोककथाओं से यह आभास होता है कि छत्तीसगढ़ के कण–कण में राम बसे हुए हैं और उनके भक्त यहां विद्यमान है जो राम के सगुण रूप के उपासक है। भक्ति आंदोलन का प्रभाव और उस समय उत्पन्न एक मात्र रामनामी संप्रदाय ही है जो रामजी को केवल उनके नाम से पूजकर उनके निर्गुण रूप का उपासक है। इस प्रकार रामनामी संप्रदाय के पूरे शरीर में रामनाम का गोदना उनके रूप सौदर्य का प्रसाधन नहीं यह गोदना उनके धार्मिक आस्था का प्रतीक है। यह संप्रदाय इसे गोदना न कहकर रामनाम अंकित कराना कहते हैं। इनका मानना है कि स्वर्ग जाते समय साथ में केवल रामनाम का अंकन जो शरीर में है वही साथ रह जाता है। इस रामनाम के अंकन से स्वर्ग में ईश्वर हमें अपने प्रिय भक्तों के रूप में पहचान लेते हैं तथा अपनी शरण में जगह दे देते हैं इस प्रकार रामनामियों का यह धार्मिक तर्क है। परंतु वर्तमान में रामनामी संप्रदाय की व्यक्तियों की संख्या में लगातार कमी आती जा रही है। अब युवा समय के परिवर्तन के साथ आधुनिकीकरण रोजगार के लिए बाहर जाने के कारण वर्तमान युवा पूरे शरीर में गोदना नहीं गुदवा रहे हैं शरीर के केवल एक अंग में राम नाम का गुदना

गुदवाकर परंपरा का पालन कर रहे हैं क्योंकि उनका मानना है कि राम नाम के अंकन से वह एक अलग से पहचाने जाते हैं जो विपरित प्रभाव डालती है। जिससे युवा पूरे शरीर में रामनाम का अंकन करवाने से कतरा रहे है फिर भी रामनामी समाज अपनी विलक्षण भक्ति धारा के साथ अपनी अलग सांस्कृतिक सामाजिक परंपरा को लिए हुए समाज में विद्यमान है। वर्तमान रामनामी नवयुवकों को अपनी इस सामाजिक धार्मिक अनोखी परंपरा के प्रति लगाव और चेतना उत्पन्न करना आवश्यक है जिससे विश्व बंधुत्व और एकेश्वरवाद के निराकर स्वरूप को रामनामी समाज की मौलिकता के लिए आगे बनाए रखना आवश्यक है जिससे आगे की पीढ़ी भी इस रामनामी संप्रदाय की सामाजिक धार्मिक और सहिष्णुता का हिस्सा बना रहे।

सदर्भ

1. अटपटु, अजय, छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में राम 2015 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पेज 17–18 और 23।
2. खान, मुश्ताक, रूप नहीं नाम को मानते हैं : छत्तीसगढ़ का रामनामी संप्रदाय (आलेख) 18.03.2019, sahapedia.org
3. वर्मा, सृष्टि, मन मथुरा और काया काशी (आलेख) 01.09.2017, jagaran.com
4. लहरे, लक्ष्मीनारायण, पुस पुन्नी भजन मेला : निराकार राम का साधक रामनामी संप्रदाय (आलेख) दक्षिण कोशल टूडे, 17.01.2019